International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 860-861

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 860-861
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2015
Accepted: 23-12-2015

डॉ0 वीणा कुमारी
W/o सूर्यनारायण सिंह,
न्यू चकदह मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 वीणा कुमारी
W/o सूर्यनारायण सिंह,
न्यू चकदह मधुबनी, बिहार, भारत

मानव जीवन में शिक्षा का महत्त्व

डॉ0 वीणा कुमारी

प्रस्तावना

संसार में जिस प्रकार से मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम स्थान है उसी प्रकार मनुष्य मात्र को समस्त प्राणियों में सर्वोत्तम स्थान दिलाने के लिए शिक्षा की सर्वोपरि साधन है। ''महाभारत'' की उक्ति है कि ''नास्ति विद्या समं चक्षुः चास्ति सत्यसमं तपः'' अर्थात न तो विद्या के समान कोई नेत्र है और न ही सत्य के समान कोई तप। अतः मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक, संतुलित और प्रगतिशील विकास है। शिक्षाने ही मानव को सुसंस्कृत तथा सभ्य बनाया। शिक्षा मानव को संवेदनशील और उसकी दृष्टि को प्रखर करती है। जिससे व्यक्ति का समन्वित विकास होता है, राष्ट्रीय एकता पनपती है, वैज्ञानिक तकनीकि की संभावना बढ़ती है, समझ और चिंतन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा के लिए जरूरत के अनुसार जनशक्ति का विकास होता है। शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को सम्बल मिलता है, जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की आधारशिला है। जीवन में शिक्षा की महत्ता को स्पष्ट करते हुए ''स्वामी विवेकानन्द'' ने लिखा है– "We want that education by which character is formed, strength of mind is increased, intellect is expanded and by which one can stand one's own feet"

शिक्षा राष्ट्रीय स्तर पर भी व्यक्ति के जीवन के विकास में सहायक होती है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के योग्य नागरिकों पर निर्भर करती है। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस, जर्मनी आदि राष्ट्रों के उन्नयन के मूल में शिक्षा का व्यापक प्रसार ही है। लोकतंत्र में शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक नागरिक का सर्वांगीण विकास करना है। लोकतंत्र को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास हो उनमें व्यावसायिक कुशलता, देश मुक्ति, राष्ट्रीय एकता, भावात्मक सद्भावना एवं राष्ट्रीय अनुशासन हो। शिक्षा इस कार्य में सबसे अधिक योगदान देती है। अर्थात् मानव जीवन के लिए शिक्षा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण साधन है।

उद्देश्य

1. मानव को आत्मनिर्भर बनाना।
2. अवकाश के समय का सदुपयोग करना।
3. आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए।
4. व्यवसायिक कुशलता का विकास करना।

शिक्षा ने मानव की प्रगति में अधिक योगदान दिया है जो निम्नांकित रूपों में परिलक्षित होता है।

1. शिक्षा द्वारा मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण और शोधन – मनुष्य में पशुओं के समान ही कुल मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण व्यवहार मूल प्रवृत्तिजन्य होता है। मनुष्य की अपनी मूल प्रवृत्तियाँ मौलिक रूप में पशुवत् व्यवहार करने की प्रेरणा देता है। मनुष्य चूँकि एक सामाजिक प्राणी है उसका अवांछनीय व्यवहार समाज के लिए हानिकारक हो सकता है, अतएव मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना और उनका शोधन करना शिक्षा सिखाती है। ऐसा करके शिक्षा व्यक्ति को मूल प्रवृत्त्यात्मक से सामाजिक व्यवहार की ओर अग्रसर करती है। इसके कारण ही मनुष्य पशुओं से भिन्न और श्रेष्ठ माना जाता है ''विद्याविहीनः पशुभिः समानः''।

2. व्यावसायिक कुशलता का विकास – मनुष्य ऐसी प्राणी है जिसकी आवश्यकताएँ असीमित एवं विविध प्रकार की हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवसाय करने पड़ते हैं। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक विकास वहाँ के औद्योगिक विकास पर निर्भर करता है। व्यावसायिक कुशलता के विकास में शिक्षा का बड़ा योगदान है। आज के भौतिकवादी युग में भौतिक सम्पदा आवश्यक है।

शिक्षा इस कार्य में सहायता करती है। डॉ. राधा कृष्णन् ने कहा है ''छात्रों को जीविकोपार्जन के योग्य बना देना शिक्षा का एक कार्य है।''

3. आवश्यकताओं की पूर्ति – व्यक्ति आवश्यकताओं का एक विशाल पुंज है। आवश्यकताएँ विभिन्न प्रकार की हो सकती है जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक आदि, आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने से व्यक्ति निराश हो जाता है जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हानिकारक है। व्यक्ति की उपयुक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति में शिक्षा का बड़ा योगदान है।

4. वातावरण के अनुकूल एवं वातावरण में परिवर्तन – शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव को अपने वातावरण के साथ अनुकूलन करने के योग्य बनना भी है, वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में असमर्थ व्यक्ति इस संसार में अपने अस्तित्व को बनाये रखने में समर्थ नहीं रहता है। शिक्षा इस कार्य में मनुष्य की सहायता करती है। शिक्षा इससे भी बढ़कर मनुष्य को अपनी आवश्यकतानुसार वातावरण में परिवर्तन करने के योग्य बनाती है। शिक्षा ने ही मनुष्य को इतना सबल बनाया है कि आज का मानव अपने वातावरण का दास न रहकर उसका निर्माता या नियंत्रक बन गया है। जो शिक्षा के द्वारा ही संभव है। ऐसे अनेक उदाहरण है जो इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य ने परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर ली है। मानव जीवन में शिक्षा की महत्ता को ''जॉन डिवी'' ने भी इसी रूप में स्वीकार किया है कि ''शिक्षा व्यक्ति को उन सब शक्तियों का विकास है जिसमें वह अपने वातावरण पर अधिकार प्राप्त कर सके और अपनी भावी आशाओं को पूरा कर सकें।''

5. आत्मनिर्भरता की प्राप्ति – मानव जीवन में शिक्षा का कार्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है। आत्मनिर्भर व्यक्ति किसी पर भार नहीं होता । वह अपना भार स्वयं अपने ऊपर लेता है। इससे न केवल उसका, वरन् समाज का भी हित होता है। वह अपना कार्य सफलतापूर्वक करता है। परिणाम यह होता है कि वह अपने जीवन में उन्नति करता है। साथ ही अपने कार्यों को सफलतापूर्वक करने के कारण वह समाज की उन्नति में भी योगदान देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ''केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलेगा हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे कि व्यक्ति अपने पैरों पर स्वयं खड़ा हो सकता है।''

6. अवकाश के समय का सदुपयोग – प्राचीन समय में मनुष्य सभी काम अपने हाथ से या मानवीय श्रम के द्वारा करते थे जिससे वक्त का सदुपयोग हो जाता था। किन्तु मशीनों का अविष्कार होने से मनुष्य के अधिकांश कार्य अब मशीनों के द्वारा सम्पन्न होते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज लोगों के पास अवकाश का अधिक समय बचने लगा है। अब समस्या यह है कि अवकाश के समय का उपयोग कैसे किया जाय। शिक्षा इस कार्य में बहुत सहायता पहुँचाती है। शिक्षा काल में ही ऐसे प्रिय कार्य (Hobby) विकसित कर दिए जाते हैं कि व्यक्ति अपने अवकाश का समय उसके माध्यम से व्यतीत कर लेता है।

7. आध्यात्मिक विकास – वास्तविक सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास में शिक्षा का ही सर्वाधिक योगदान रहता है। आज यूरोज तथा अमेरिका के निवासी भौतिकवाद से इतने उब गये हैं कि उनका झुकाव स्वतः आध्यात्मिक की ओर बढ़ता जा रहा है। महात्मा गाँधी ने भी शिक्षा को विकास के अर्थ में ही लिया था। तभी तो शिक्षा के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा था ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य यह है कि बालक और मानव में पूर्णरूप से शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यमिक बल की सर्वाधिक उन्नति हो'' शिक्षा वह है जिसका परिणाम मुक्ति है – ''सा विद्या या विमुक्तये''।

8. शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन – शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसका समाज के साथ घनिष्ठ संबंध है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। समाज अपनी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए शिक्षा पर ही निर्भर रहता है। शिक्षा समाज के सदस्यों को नवीन सत्यों की खोज करने के योग्य बनाती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण को विस्तृत करके नवीन सत्यों को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज के सदस्यों के आचरण एवं विचारों में परिवर्तन होता है।

9. जीने का सच्चा अर्थ शिक्षा – एरिस्टोटल ने जीने का सच्चा अर्थ ही शिक्षा से लिया है। उनके लिए ''शिक्षा'' ही स्पन्दन है, शिक्षा कही गति है, शिक्षा ही विकास है, शिक्षा ही जीवनी शक्ति है। एरिस्टोटल के अनुसार– "Educated men are as much superior to uneducated as the living are to the dead".

10. शिक्षा द्वारा विभिन्न वर्गों का सम्बल होना – शिक्षा समाज के विभिन्न के लिए एक विशेष सम्बल प्रदान करती है। डायोगिनीज के अनुसार ''शिक्षा युवकों के लिए एक शानदान सन्तुलन है, वृद्धों के लिए बड़ी सन्तोषदायी है, निर्धनों का धन और धनवानों का आभूषण है।

निष्कर्ष

कुछ भी हो शिक्षा से मनुष्य सबल बन जाता है–कुछ अपूर्व, कुछ अनुपम। संगमरमर के अनगढ़ पत्थर के लिए मूर्तिकार का जो महत्व है, वहीं महत्व आत्मा के लिए शिक्षा का है। शिक्षा मनुष्य को अन्धकार रूपी भ्रम से निकालकर प्रकाशरूपी ज्ञान के स्वस्थ वायुमण्डल में अपना सर्वांगीण विकास करने की क्षमता प्रदान करती है। विद्वान् मनीषी ने ठीक ही लिखा है – ''विद्या माता की भाँति रक्षा करती है, पिता की भाँति हित में लगती है, पत्नी के समान दुःखों को दूर करके सुख प्रदान करती है।''

संदर्भ

1. Rural Development in India: 1992- Desai V.
2. शैक्षिक समाज – डॉ. सच्चिदानन्द सिंह।
3. इन इनट्रोडक्शन टु हाई स्कूल टीचिंग – एस. एस. कॉलडिन
4. ऑडियो विजुवल मैथड्स इन टीचिंग – एडगर डेल ।
5. शिक्षा दर्शन – डॉ. सुधाकर प्रसाद सिंह
6. शिक्षा सिद्धान्त – बी. एन. सिंह